" मैं यशोधरा...."

(एकल नाटक)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें और पढ़वाएं)

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था, लखनऊ (उ.प्र.)
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक...

....

(सेट पर पीछे की तरफ एक महाराजा कुर्सी रखी हुई है। आगे एक साइड में मोढ़ा/ब्लॉक रखा है। इसके बगल में छोटी टेबल रखी है, जिसपर पानी का भरा जग, ग्लास, दोनों तांबे के, रखें हैं। एक कमल का फूल, डंडी सहित। और दूसरी तरफ बेंच पड़ी हुई है। नाटक की शुरुआत संगीत बजने से होती है।...पाया..जो..तुमको..मैंने,...मैं...यशोधरा....। संगीत के बीच में यशोधरा का मंच पर प्रवेश। बीच-बीच में और गीत-संगीत पड़ेगा

मैं यशोधरा...सिद्धार्थ की गोपा... कोलियराज दण्डपाणि नाम के प्रसिद्ध शासक की पुत्री हूं। मेरे तात् का रामगाम नामक देश पर शासन चलता था। जो कपिलवस्तु के निकट के किसी कस्बे में रहते थे। कैसा सुखद संयोग है, कि जिस दिन मेरा जन्म हुआ। ठीक उसी दिन कपिलवस्तु नरेश के पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ का भी जन्म हुआ, यानी वैशाख पूर्णिमा के दिन। इस दृष्टि से आप कह सकते हैं कि मेरी उम्र लगभग सिद्धार्थ के बराबर ही रही होगी।

कपिलवस्तु की महारानी गौतमी की मेरे ऊपर अनुकंपा थी। वह मुझे अपनी पुत्रवधू बनाने की सोचती रहती थीं। जब मेरी आयु 16 वर्ष की हो गई, तो मेरे तात् मेरे विवाह के लिए चिंतित रहने लगे। अतः वह विवाह के लिए भागदौड़ में लग गए।

कपिलवस्तु के युवराज सिद्धार्थ की शांतिप्रियता से चिंतित होकर महाराजा शुद्धोधन ने विलासमय एवं सुखदायी वैभव से परिपूर्ण सभी संसाधनों को उपलब्ध करा दिया। किंतु सिद्धार्थ का मन इन सब में भी नहीं लग पाता था।

प्रत्येक वर्ष की भांति एक महोत्सव का आयोजन करके महाराजा शुद्धोधन ने आसपास के देशों और कपिलवस्तु की सुंदरियों एवं राजकुमारियों को आमंत्रित किया। शायद इस उत्सव का अघोषित उद्देश्य राजकुमार के लिए योग्य वधु का चयन करना था। उत्सव के समाप्त होने पर युवराज सिद्धार्थ द्वारा पुरस्कार बांटने की व्यवस्था की गई थी। आयोजन में उपस्थित सभी सुंदरिया अपना-अपना पुरस्कार प्राप्त करके वापस लौट गई। तो सबसे बाद में मेरे पुरस्कार लेने का अवसर आया, तब मैंने निवेदन किया...

मैं भी तो आमंत्रित हूं युवराज...

तब राजकुमार सिद्धार्थ ने हेम निर्मित अशोक-पात्र मुझे उपहार में दिया।

कुछ समय पश्चात...परंपरा के अनुसार, मेरे तात् ने पड़ोसी देशों के राजकुमारों को स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। क्योंकि खत्तिय राजवंशों में परंपरा थी, स्वयंवर उत्सव की। आस पड़ोस के देशों के राजकुमार मेरे रूप सौंदर्य से भलीभांति परिचित थे। अतः सभी मुझे अपनी जीवनसंगिनी बनाने के लिए बहुत अधीर थे। इसीलिए उन सभी राजकुमारों ने स्वयंवर में सम्मिलित होने की सहमति का समाचार भी भिजवा दिया।

यह निमंत्रण युवराज सिद्धार्थ के लिए भी भेजा गया था। महाराज शुद्धोधन और प्रजापति गौतमी ने सिद्धार्थ को स्वयंवर में सम्मिलित होने और स्वयंवर में विजय प्राप्त कर मेरे साथ विवाह करने के लिए कहा। प्रजापति गौतमी ने सिद्धार्थ से कहा :

बेटा यह अवसर हाथ से मत जाने देना। हमें तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा है। तुम इस स्वयंबर को जीत कर दिखाओगे। मैं यशोधरा को बहू के रूप में देखना चाहती हूं। देखो..मुझे निराश मत करना।

अतः सिद्धार्थ भी अन्य राजकुमारों की तरह भाग लेने आए। देवदत्त भी उनमें से एक थे। जितने भी राजकुमार स्वयंवर में भाग लेने के लिए पहुंचे थे, उनमें मैंने युवराज सिद्धार्थ

को ही अपने जीवन साथी के रूप में चुना। मेरे इस व्यवहार से सभी राजकुमार विचलित हो उठे। देवदत्त उनका उग्र नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने एक स्वर में कहा :

स्वयंवर के लिए बुलाया है, तो प्रतियोगिता कराओ। भला व्यक्तिगत पसंद का क्या मतलब ?

मेरे तात् भी मेरे इस निर्णय से प्रसन्न नहीं थे। तात् सिद्धार्थ के स्वभाव से भी भलीभांति परिचित थे। वे सिद्धार्थ की एकांतप्रियता से भी भयभीत थे। अतः वे हमारे सुखी जीवन के बारे में भी निश्चित नहीं थे। वह सोचते थे कि सिद्धार्थ को साधु-संतों की संगत ही अच्छी लगती है। तो भला वह सद्गृहस्थ कैसे बन सकते हैं? उन्हें लगता था कि हमारा दांपत्य जीवन सफल नहीं होगा। लेकिन मैं भी अपने संकल्प पर अटल थी, मैं सिद्धार्थ के अलावा किसी और से विवाह करना ही नहीं चाहती थी।

मेरी मां को जब सारी बात का पता चला, तो उन्होंने भी तात् से स्पष्ट रूप से कह दिया :

मुझे भी यशोधरा का विवाह सिद्धार्थ के अलावा किसी अन्य राजकुमार से स्वीकार नहीं।

मां ने तात् को बहुत समझाया, कि वे व्यर्थ का अहम् छोड़ दें। तात् ने देखा कि, मां भी मेरी हां में हां मिला रही है, तो उन्होंने भी हंसते हुए कहा :

अच्छा ठीक है..सब की खुशी में हमारी भी खुशी है।

प्रतिद्वंदी राजकुमार बैठे-बैठे सारी घटना देख रहे थे। सारा हाल चाल देखकर वे केवल निराशा ही नहीं हुए, बल्कि उन्हें लगा जैसे उनका अपमान किया जा रहा है। उनका मानना यह था कि जब स्वयंवर के लिए बुलाया है, तो वर का चयन करने से पूर्व किसी न किसी रूप में सभी की परीक्षा जरूर ली जाए।

राजकुमार देवदत्त भी इस कार्य में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे थे। सभी प्रतिद्वंद्वी बहुत मजबूती के साथ एक हो गए। और उन्होंने तात् से अनुनय-विनय कर लक्ष्यभेद प्रतियोगिता का प्रस्ताव मनवा ही लिया।

छंदक राजकुमार सिद्धार्थ का सारथी और अनन्य मित्र था। उसने देखा, न जाने आज सिद्धार्थ को क्या हो गया है। जो स्वयंवर के नामसे कतरा रहे हैं। छंदक ने सिद्धार्थ से कहा :

आर्य ! क्या कमी है आपमें, जो प्रतियोगिता से मुंह मोड़ रहे हैं। जबकि आपमें न तो बाहुबल की कमी है, न ही रण कौशल की। आप धनुर्विद्या में, अश्वारोहण में, खड्ग-विद्या में‌ं, सभी प्रकार से तो निपुण हैं। आप एक बार प्रतियोगिता में कदम तो रखें, सारे के सारे प्रतियोगी भागते नजर आएंगे। और यदि आप ऐसे ही संकोच करते रहे, तो यहां पर उपस्थित लोग इसका गलत अर्थ लगाएंगे। जो आपकी छवि भी और आपके परिवार के गरिमा के लिए उचित नहीं होगा।

छंदक की बातें सुनकर सिद्धार्थ कुछ देर तक तो मौन रहे, फिर अचानक खड़े हुए, और अपने लक्ष्य भेद के प्रदर्शन से सभी को चकित कर दिया। और सभी राजकुमार सिद्धार्थ की जय जयकार करने लगे। इस विजय से सबसे अधिक खुशी मुझे हुई, और मैंने हर्षित मन से सिद्धार्थ के गले में जयमाला डाल दिया। बाद में सिद्धार्थ ने मुझे बताया, कि स्वयंवर प्रथा के पक्ष में वह इसलिए नहीं थे, क्योंकि वह इसे नारी अस्मिता एवं गरिमा का अपमान मांगते थे।

मैं विदा होकर अपनी ससुराल आ गई। वह मेरा बहुत ख्याल रखते थे। वह मुझे प्यार से गोपा कहते थे। जब वह गोपा पुकारते हुए मेरे कक्ष में प्रवेश करते थे, तो ऐसा लगता था, कि हजारों घंटियां एक साथ बजे उठी हों। और हर घंटी में एक ही स्वर गूंजता था। था गोपा..., गोपा... गोपा.....।

विवाह के पश्चात लगभग 10 वर्ष हो चुके थे। किंतु जब मुझे कोई संतान नहीं हुई, तो महाराजा शुद्धोधन और महाप्रजापति गोतमी भी चिंतित रहने लगी। मैं भी उनकी भावनाओं से खूब अच्छी तरह परिचित थी। मगर प्रकृति की व्यवस्था के सामने मैं कर ही क्या सकती हूं। आखिरकार वो दिन आ ही गया, जिसका सबको बेसब्री से इंतजार था। मेरे गर्भधारण करने के समाचार से सभी हो खुशियां छा गई।

एकदम राजकुमार प्रसन्न मुद्रा में उद्यान में बैठे थे। उसी समय उन्हें खबर दी गई कि मैंने एक पुत्र को जन्म दिया है। यह सुनकर वह विचार करने लगे कि यह बालक हमारे संसार त्याग को ग्रसने ने के लिए राहु रूप में उत्पन्न हुआ है। वह बोले :

'राहु आया है.....'

और राहु शब्द सुनकर महाराज शुद्धोधन ने अपने पौत्र का नाम राहुल रखा। इस समय राजकुमार सिद्धार्थ की आयु 29 वर्ष की थी। राहुल के जन्म से महाराज शुद्धोधन के आनंद का ठिकाना न रहा।

किंतु मैंने अनुभव किया कि युवराज का मन महलों में भी नहीं लग रहा। तो सोचा सारी बात महारानी गौतमी और महाराज शुद्घोधन को बता देना ठीक होगा। मैंने एक दिन मौका पाकर महारानी को सारी बातें बता दी। उन्होंने समझाते हुए कहा :

बेटी धैर्य से काम लेना और किसी तरह की चिंता मत करना, एक दिन सब ठीक हो जाएगा।

कहने को तो प्रजापति गौतमी ने मुझे निश्चिंत रहने की सलाह दे दी। किंतु खुद चिंतित हो उठी। उन्होंने जब यही बातें महाराजा शुद्धोधन से कह सुनाई, तो महाराज भी बेचैन हो उठे। अब उन्होंने इस समस्या से पार पाने के लिए गंभीरता से सोचना आरंभ कर दिया। अंततः एक अंतःपुर की व्यवस्था की, जहां अनेक सुंदर स्त्रियों, नृत्यांगना और नगरवधुओं को आमंत्रित किया गया। किंतु युवराज पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। हारकर सब सुंदरिया वहां से कूच कर गई। मैं अपना मन मसोसकर सब तमाशा देखती रही। हां, मुझे इस बात पर गर्व अवश्य था, कि दुनिया भर की एक से बढ़कर एक सुंदरी भी मेरे पति को अशक्त नहीं कर सकी।

मुझ पर एक बार फिर संकट के बादल मंडराने लगे। जब रोहिणी नदी के जल बंटवारे को लेकर, कपिलवस्तु के शाक्यों का पड़ोसी राज्य के कोलियों के साथ युद्ध छिड़ गया। दोनों पक्ष के सैनिक और जनता के लोग काफी मात्रा में जख्मी हुए। कपिलवस्तु के शाक्य सरदारों ने निर्णय किया, कि पानी को लेकर आए दिन विवाद होता रहता है। क्यों ना एक ही बार निर्णायक युद्ध द्वारा इस विवाद को सदा सदा के लिए समाप्त ही कर दिया जाए। सिद्धार्थ को जब इस योजना को पता चला, तो उन्होंने युद्ध करने की योजना का प्रबल विरोध किया। सिद्धार्थ गौतम का कहना था :

युद्ध से कभी किसी समस्या का हल नहीं होता। बल्कि अगले युद्ध का जन्म होता है। हमें बातचीत के द्वारा इस समस्या का हल ढूंढ लेना चाहिए।

प्रधानमंत्री को युवराज की यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्हें ऐसा आभास हुआ, जैसे वे कायरता की बात कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने युवराज के परामर्श को राज्य के कार्य में अनाधिकार हस्तक्षेप माना। अत: देश की रीति नीति के अनुसार, युवराज सिद्धार्थ को देश छोड़कर जाने का आदेश दिया गया। यह आदेश एक तरह से दंड ही था। महाराज भी लाचार थे। जो शाक्य-संघ के नियमों को नहीं बदल सकते थे।

जब मुझे इस बात का पता चला तो, मेरे पैरों के नीचे से मानो जमीन ही खिसक गई हो। सिद्धार्थ का अपने पिता और मौसी प्रजापति गौतमी से काफी समय तक वार्तालाप हुआ। उन्होंने सिद्धार्थ को समझा-बुझाकर रोकना चाहा, किंतु बात नहीं बनी। तब सिद्धार्थ मेरे कक्ष में पहुंचे, उनके मुंह से एक वचन तक नहीं निकला। मैं ही चुप्पी तोड़ते हुए बोली....

'कपिलवस्तु में शाक्य संघ की सभा में जो कुछ हुआ वह सब मैं सुन चुकी हूं।'

सिद्धार्थ ने पूछा : यशोधरा ! मुझे बताओ, कि मेरे प्रव्रज्जित होने के निर्णय के बारे में तुम क्या सोचती हो ?

वे समझते थे कि शायद मैं बेहोश हो जाउंगी, किंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

अपनी भावनाओं को अच्छी तरह से वश में रख कर मैंने उत्तर दिया :

'यदि मैं आपकी स्थिति में होती, तो मैं भी इसके अलावा और क्या करती? निश्चय ही मैं कोलियों के विरुद्ध युद्ध के पक्ष में नहीं होती। आपका निर्णय ठीक है। यदि मुझे राहुल का पालन-पोषण न करना होता, तो मैं भी आपके साथ प्रव्रज्जित हो जाती। आप अपने माता-पिता तथा पुत्र की चिंता न करें। मैं जब तक जिऊंगी उनकी देखभाल करूंगी।'

अब मैं सिर्फ इतना चाहती हूं, कि जब आप अपने प्रिय संबंधियों को छोड़कर प्रव्रज्जित होने जा ही रहे हैं, तो आप किसी ऐसे नए पद का आविष्कार करिएगा, जो मानवता के लिए कल्याणकारी हो।

उन्होंने मुझे राहुल को लाने को कहा। उस पर एक पिता की वात्सलपूर्ण दृष्टि डालकर वहां से प्रस्थान कर गए।

अगले दिन सिद्धार्थ अपने पिता महाराजा शुद्धोधन, महारानी गौतमी, मैं और मेरा पुत्र राहुल, अमात्यों और दास-दासियों, सभी को सिद्धार्थ ने हाथ जोड़कर नमन किया। और महाभिनिष्क्रमण के लिए सभी का आशीर्वाद मांगा। बड़े भारी मन से रोते बिलखते हुए, सभी ने राजकुमार को आंसुओं भरी विदाई दी, और उनके स्वस्थ सुखी जीवन की कामना की। राजकुमार सिद्धार्थ कंथक घोड़े की पीठ पर सवार होकर, अपने सारथी छन्न के साथ महल से निकल पड़े। सिद्धार्थ अपना सब-कुछ छोड़कर चले गए। उनका यह गमन जनकल्याण और लोकमंगल के लिए था, प्राणी मात्र के कल्याण के लिए था। इसलिए इस ऐतिहासिक घटना को महाभिनिष्क्रमण नाम से जाना जाता है।

सिद्धार्थ की अनुपस्थिति में मैं भी कोई हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठी रही। मुझे आशा थी कि मेरे स्वामी जनकल्याण और परमार्थ कार्य में सफलता प्राप्त करके अपने राहुल के पास अवश्य आएंगे। इसी भावना के साथ सिद्धार्थ के चले जाने के पश्चात 7 वर्षों तक, उनकी अनुपस्थिति में उनके मार्ग पर चलने का भरपूर प्रयास करती रही। मुझे जब पता चला कि उन्होंने अपना सिर मुण्डवा लिया है तो मैंने भी अपना सिर मुण्डवा लिया। जब मुझे समाचार मिला कि उन्होंने गहनों और सुगंधित द्रव्यों का त्याग कर दिया है। तो मैंने भी राजसी वस्त्राभूषण उतार दिये। मैंने जब सुना कि वह एकाहारी हो गए, तो मैंने भी मिट्टी के बर्तन में एक समय ही भोजन करना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, जब मेरे स्वामी ही बनवासी हो गए, तो अपने पति की सच्ची सहचरी भला कैसे राजसी वैभव के सुख का उपभोग कर सकती थी ?

सिद्धार्थ एक आश्रम से दूसरे आश्रम, तथा एक गुरु से दूसरे लोगों के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए गए, किंतु उन्हें सच्चा ज्ञान कहीं नहीं मिला। अंततः निरंजना नदी के तट पर महाबोधिवृक्ष की छांव में वज्रासन लगाकर बैठ गए। लगभग 6 वर्ष की कठोर तपस्या के पश्चात्, वैशाख पूर्णिमा को बुद्धत्व प्राप्त किया और सम्यक-संबुद्ध कहलाए।

सम्बोधी प्राप्ति के पश्चात बुद्ध ने सारनाथ में पधार-कर धम्मचक्कपवत्तन किया और प्राणी मात्र के दुखों को अपनी करुणा से दूर करने तथा धम्मउपदेश की सुधा वर्षा कर, नए-नए कीर्तिमान स्थापित करते रहे। सारनाथ में उन्होंने अपना प्रथम उपदेश पांच ब्राह्मणों

को दिया। जो तथागत को छोड़कर चले गए थे, और भिक्खु संघ की स्थापना की। इसके बाद उन्होंने एक के बाद एक को दीक्षा देकर संघ में सम्मिलित किया। तथागत धनम्पमथ बढ़े, तो बढ़ते ही चले गए और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

तथागत की तथागत की पावन शरण ग्रहण करने वाले सभी तरह के लोग थे। सारिपुत्र ब्राह्मण हो या अनिरुद्ध क्षत्रिय, मल्लिए वैश्य हो या उपाली नाई, सुणीत अछूत हो या सोपाक चांडाल, अंगुलिमाल डाकू हो या अम्बपाली नर्तकी, सभी लोग तथागत की पावन शरण ग्रहण करके, पावनता का साक्षात्कार करते चले गए।

महाराजा शुद्धोधन और महाप्रजापति गौतमी ने जब अपने पुत्र के कीर्ति-गाथा सुनी, तो वे बड़े अधीर हो उठे। एक दिन महाराज ने से मैंने कहा :

महाराज ! बहुत से लोग राहुल के पिता के बारे में बहुत अच्छे-अच्छे समाचार सुना रहे हैं। बहुत से दुःखी नर-नारी उनके संपर्क में आकर धन्य हो रहे हैं। अतः हम लोगों को भी उनके दर्शनों के लिए जाना चाहिए।

महाराज भोले : नहीं बेटी ! ऐसा नहीं है, मैं चाहता हूं कि सिद्धार्थ स्वयं यहां आएं।

सह महाराज की मुझे छोड़कर तथागत से मिलने का नहीं गए। उन्होंने तथागत को कपिलवस्तु में आमंत्रित करने के लिए कई लोगों द्वारा संदेश भेजा। परंतु वह सभी लोग तथागत के प्रभाव से प्रव्रज्जित होकर भिक्षु संघ में सम्मिलित हो गए। महाराज शुद्धोधन का संदेश तथागत तक किसी ने नहीं पहुंचाया। आखिरकार महाराज ने अपने अति विश्वसनीय अमात्य कालउदाई को बुलाया, और उससे कहा :

कालउदाई ! मैंने तथागत को आमंत्रित करने के लिए कई लोगों द्वारा संदेश भेजा, मगर उनमें से एक भी वापस नहीं लौटा। इसलिए तुम्हें बहुत विश्वासपात्र समझ कर भेज रहा हूं। तुमही सिद्धार्थ को बुला कर ला सकते हो। क्योंकि सिद्धार्थ तुम्हारे साथ ही खेल कूद कर बड़ा हुआ और तुम्हारा अच्छा मित्र भी है। उनसे कहना कि मैं मरने से पूर्व अपने पुत्र को जी भर कर देखना चाहता हूं। दूसरे लोगों को तो उनका धम्मोपदेश रुपी अमृतपान करने को मिल रहा हैै, लेकिन उनके माता-पिता और उनके बाल बच्चों को नहीं। हम उनके दर्शन तक के लिए तरस रहे हैं।

कालउदाई ने शुद्धोधन को आश्वस्त किया, कि मैं अवश्य ही पिता-पुत्र का मिलन करवाउगा और वह महाराज का संदेश लेकर चल दिए। उस समय तथागत बुद्ध अपने विशाल भिक्खु संघ सहित राजगृह में विराजमान थे। कालउदाई राजगृह में ही तथागत के सानिध्य में रहे, और मौका देखकर महाराजा शुद्धोधन का संदेश कह सुनाया। तथागत ने कालउदाई से अपने माता-पिता व परिवार के लोगों का संदेश सुना, तो वे मौन हो गए।

अगले ही दिन तथागत अपने विशाल भिक्खु संघ और कालउदाई के साथ कपिलवस्तु की ओर चल दिए। तथागत के कपिलवस्तु में आगमन पर स्वागत के लिए उस दिन नगर को नई नवेली दुल्हन की तरह सजाया गया था। महाप्रजापति गौतमी और महाराज शुद्धोधन अपने अमात्यों, सैनिकों और दास-दासियों सहित महल के मुख्य द्वार पर तथागत के स्वागत के लिए पलके बिछाए खड़े थे। ऊपर महल के प्रथम तल पर मैं भी राहुल को साथ लिए, अपनी दासियों के साथ छज्जे ऊपर खड़ी बहुत आतुरता से अपने स्वामी की प्रतीक्षा कर रही थी। मेरे हाथ में एक बड़ा सा कमल का फूल भी था।

जब तथागत अपने विशाल संख्या वाले महान् भी भिक्षु संघ सहित महल में पधारे, तो सारा नगर उनके स्वागत में जयघोष करने लगा। जयघोष की ध्वनि से सारा आकाश गूंज उठा। तथागत के साथ-साथ एक ओर धम्म सेनापति सारिपुत्र और दूसरी ओर महामोगल्लान चल रहे थे। छतों और वृक्षों पर चढ़े लोग तथागत के स्वागत में पुष्प वर्षा करने लगे। महिलाएं अपने बच्चों को तथागत के पावन चरणों में नवा रही थीं। तथागत इन सभी को स्पर्श करते हुए चले जा रहे थे। सब नगरवासी तथागत को अपने बीच पाकर अपने को धन्य मान रहे थे।

दूर से मैंने अपने पति को आते देखा तो मेरी आंखें भर आईं। और नजर भर कर उन्हें देखना चाहा मगर अश्रुपूरित आंखों से नहीं देख पाई। आंखों के साथ-साथ मेरा मन भी भर आया। अपनी नम आंखों सहित महल के अंदर दौड़ गई। महल के कोने में जाकर घुटनों में सर रखे काफी देर तक बैठी रही।

अपने सभी संबंधियों से भेंट कर लेने के बाद तथागत ने पूछा :

यशोधरा दिखाई नहीं दे रही ! सब आए हैं, मगर वह कहां है ?

तथागत को बताया गया, कि यशोधरा ने आने से मना कर दिया है।

तथागत यह उत्तर सुनकर तुरंत अपने आसन से उठे और सीधे मेरे भवन की ओर चल दिए। सारिपुत्र और महामोगल्लान से तथागत ने कहा :

मैं तो मुक्त हूं। लेकिन यशोधरा अभी तक मुक्त नहीं है। इतने लंबे समय तक उसने मुझे देखा नहीं है। जब तक उसका दुःख आंसुओं के माध्यम से बह नहीं जाए, तब तक उसका मन मोह से भरा ही रहेगा। इस दौरान यदि यशोधरा मुझे इस रूपष भी कर ले, तो उसे रोकना नहीं।

मैं गहरी सोच-विचार में डूबी हुई अपने कमरे में बैठी थी। जैसे ही तथागत ने मेरे कक्ष में प्रवेश किया, मैं यह भूल गई, कि मेरा स्वामी स्नेह भाजन महामानव बुद्ध है, लोकगुरु है, सत्य का महान् उपदेशक है। मैंने जोर से उनके चरण पकड़े और फूट-फूट कर रो पड़ी...

मेरा यह व्यवहार मेरे गहन स्नेह से उत्पन्न हुआ है। और यह एक क्षणिक भावना का परिणाम नहीं है। यह वर्षों के विरह का ही परिणाम है।

मेरी वेदना... वचनों से परे की बात थी। भला वह शब्दों में कहां व्यक्ति हो सकती थी ?

उसके बाद राहुल तथागत के पास गया और उनके चेहरों को देखता हुआ स्नेह स्वर में बोला :

हे श्रमण आपकी छाया बड़ी ही सुखकर है। क्या या आप मेरे पिता हैं... क्या आप मेरे पिता हैं... क्या आप मेरे पिता हैं...

तथागत मौन रहे। जब तथागत ने भोजन समाप्त कर लिया, तो उन्होंने आशीर्वाद दिया और महल से चल दिए। राहुल पीछे पीछे हो लिया और अपना उत्तराधिकार मांगता रहा। राहुल को किसी ने नहीं रोका, स्वयं तथागत ने भी नहीं।

तथागत सारिपुत्त की ओर देखा और कहा :

मेरा पुत्र उत्तराधिकार चाहता है। मैं उसको यह नाशवान् निधि नहीं दे सकता, जो अपने साथ चिंताएं और दुःख लाती हैं। लेकिन मैं इसे पवित्र जीवन का उत्तराधिकार दे सकता हूं, कि ऐसी निधि है जो कभी नष्ट नहीं हो सकती।

तब राहुल को ही गंभीरता के साथ संबोधित करते हुए तथागत बोले :

सोना, चांदी और हीरे मेरे पास नहीं हैं। किंतु यदि तू आध्यात्मिक निधि पाने की इच्छा रखता है, और उसे संभाल कर रखने में समर्थ है, तो वह मेरे पास बहुत है। मेरी आध्यात्मिक निधि, मेरा सदाचरण का मार्ग ही है। क्या तू मेरे संघ में शामिल होना चाहता है।

राहुल ने दृढ़ता पूर्वक उत्तर दिया : हां मैं शामिल होना चाहता हूं।

इतना कहते ही राहुल को प्रव्रज्जित कर भिक्खु संघ में सम्मिलित कर लिया गया। इस घटना से दुःखी होकर महाराज शुद्धोधन ने तथागत से यह आश्वासन लिया, कि किसी को भी 12 वर्ष से कम आयु में प्रव्रज्जित न किया जाए। यदि किया जाए तो उसके माता-पिता की अनुमति अवश्य हो। तथागत ने इस नियम को विनयसुत्त का अंग बना दिया था।

रोहड़ी नदी के जल बंटवारे के कारण शाक्यों और कोलियों में विवाद होता रहता था। इस बार फिर प्रबल संघर्ष की नौबत आ गई। दोनों ओर से बुद्धिमान कुशल पुरुष तथागत के पास के पास गए और उनसे निवेदन किया :

आप कपिलवस्तु पधारें और झगड़े को शांत कराएं।

तथागत ने उनकी प्रार्थना के अनुरूप अपने विशाल भिक्षु संघ के साथ कपिलवस्तु की ओर चल दिए। वहां जाकर उन्होंने झगड़ा शांत किया और कलहविवाद-सुत्त का उपदेश दिया। उसे सुनकर बहुत से शाक्य घर छोड़कर प्रव्रज्जित हो गए। उन सब की सभी स्त्रियां महाप्रजापति गौतमी के बुलावे पर इकट्ठी हुई न। राजमाता प्रजापति गौतमी ने सभी को कहा :

जब हम सब के स्वामियों ने तथागत की शरण पाकर अपना जीवन सफल कर लिया है, तो हम यहां रह कर क्या करेंगीं। आओ ! हम भी तथागत के पास जाकर प्रव्रज्या की मांग करें।

मैंने भी सोचा जब मेरे स्वामी प्रव्रज्जित होकर सर्वज्ञ हो गए। लोकगुरु हो गए। पुत्र भी प्रव्रज्जित होकर उन्हीं की शरण में चला गया। मेरी मौसी-सास महाप्रजापति गौतमी भी तथागत की शरण में जा रही हैं। फिर भला मैं यहां अकेली रह कर क्या करूंगी। मैं भी इन सभी के साथ श्रावस्ती चलती हूं, मैं भी वहां जाकर प्रव्रज्जित हो जाऊंगी। मेरे साथ महाप्रजापति गौतमी और बहुत-सी स्त्रियां श्रावस्ती में प्रव्रज्या मांगने आ गईं। परंतु तथागत ने प्रव्रज्जित करने से मना कर दिया और अपने भिक्षु संघ सहित वैशाली चले

गए। बाद में आनंद के बीच में पड़ने से हम सभी स्त्रियों की प्रव्रज्या हुई। भिक्खुणी हो जाने के पश्चात में भद्दा कच्चाना नाम से प्रसिद्ध हुयी।

मैंने भिक्खुणी होने के पश्चात कठिन तपस्या की तथा पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और दस पारमिताओं का पालन करते हुए, महाभिज्ञा प्राप्त की। आज मैं 78 वर्ष की हो गई हूं। यह मेरा अंतिम जन्म है। आपको छोड़ कर कहां जाउंगी? मेरी अन्य शरण कहां है? मैंने निर्वाण प्राप्त कर लिया है...

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु...

भवतु सब्ब मंगलम्...

सबका मंगल हो...

सबका मंगल... (सबका मंगल गीत आएगा)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था, लखनऊ (उ.प्र.)
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

Note : माननीय गगन मलिक जी, इस स्क्रिप्ट को पढ़कर सुधार करने की कृपा करें।